International Journal of Applied Research 2017; 3(11): 442-445

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(11): 442-445
www.allresearchjournal.com
Received: 05-09-2017
Accepted: 06-10-2017

डॉ. ऋचा गोस्वामी
पी–एच.डी. (समाजशास्त्र) – अ.प्र. सिंह वि.वि. रीवा, म.प्र, भारत

Correspondence
डॉ. ऋचा गोस्वामी
पी–एच.डी. (समाजशास्त्र) – अ.प्र. सिंह वि.वि. रीवा, म.प्र, भारत

उमरिया जिले में जनजातीय महिलाओं में रोजगार का स्वरूप एवं प्रवृत्ति

डॉ. ऋचा गोस्वामी

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र उमरिया जिले में जनजातीय महिलाओं में रोजगार का स्वरूप एवं प्रवृत्ति के अध्ययन पर आधारित है। इस शोध पत्र के माध्यम से जनजातीय महिलाओं में रोजगार का स्वरूप एवं प्रवृत्ति के अन्तर्गत जिले में कृषि क्षेत्र एवं कृषि रोजगार में संलग्न जनजातीय महिलाएँ, धारित भूमि, भूमि उपयोग, रोजगार प्राप्त जनजातीय पुरुष एवं महिलाएँ, असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिक, आदि का अध्ययन शामिल किया गया है। जिले में जनजातीय महिलाओं के जीविका के साधन कृषि में पिछड़ी तकनीक के कारण उत्पादन कम होता है। कुछ आदिवासी नई तकनीक प्रयोग करने लगे हैं, परन्तु इनका प्रतिशत कम है।

कुट शब्दः उमरिया जिला, जनजातीय महिलाएँ, रोजगार, अर्थव्यवस्था

प्रस्तावना
21 वीं सदी का भारत, 1947 ई. के अंग्रेजी दासता से मुक्त हुए भारत से बिल्कुल अलग है। देश को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुए 63 वर्ष बीत चुके हैं। 1947–2010 ई. की अवधि में देश में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक आदि कई क्षेत्रों में परिवर्तन एवं सफलतायें देखी गई है। भारत की गणना विश्व के सबसे बड़े एवं सफल लोकतंत्र के रूप में की जाती है। प्राकृतिक संसाधनों तथा जनशक्ति से परिपूर्ण भारत 21 वीं सदी में विश्व पटल पर विकास के पथ पर अग्रसर है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला, साहित्य, संचार, बैकिंग, परिवहन, स्वास्थ्य तथा शिक्षा आदि में देश ने विगत दशकों में तीव्र गति से विकास किया है। 1991 के दशक में अपनाये गये उदारीकरण एवं वैश्वीकरण से भारतीय अर्थव्यवस्था की पूरी तस्वीर ही बदल गई है। 8.5 प्रतिशत की वार्षिक विकास दर से बढ़ती भारतीय अर्थव्यवस्था वर्ष 2012 ई. तक चीन की अर्थव्यवस्था को पीछे छोड़ते हुए विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरेगी। लेकिन यह तस्वीर का एक पहलू है।[1] दूसरा पहलू यह है कि इतनी प्रगति होने के बावजूद देश कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में पर्याप्त विकास नहीं कर सका है।[2]
उमरिया जिले में जनजातीय महिलाओं मे सामाजिक गतिशीलता में विगत दशक से वृद्धि हो रही है। जिले की जनजातीय महिलाओं में मुख्य रूप से क्षेत्रीय समूह गतिशीलता एवं अंतः व्यवसायी गतिशीलता देखने को मिलती है। जबकि बाह्य व्यवसायी गतिशीलता का प्रतिशत बहुत ही कम है। भारत जैसे परंपरावादी एवं जाति व्यवस्था वाले समाज में बाह्य व्यवसायी सामाजिक गतिशीलता कम पायी जाती है। इसके अतिरिक्त अंतः राज्यीय एवं अंतः धार्मिक गतिशीलता जनजातीय महिलाओं में पुरूषों की अपेक्षा कम ही मिलती है। जिले की जनजातीय महिलाओं में अर्न्तराष्ट्रीय सामाजिक गतिशीलता नहीं है।

उद्देश्य
उमरिया जिले की जनजातीय महिलाओं में सामाजिक गतिशीलता का विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन कर इनकी वास्तविक स्थिति की ओर शासन का ध्यान आकृष्ट करना तथा जिले की जनजातीय विकास की धारा की समग्र विवेचना करना ही इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।
शोध अध्ययन के महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नलिखित है–
1. उमरिया जिले की जनजातीय महिलाओं में शिक्षा के स्तर को ज्ञात किया गया है।
2. जनजातीय जनसंख्या की सामाजिक प्रस्थिति एवं स्तरीकरण को ज्ञात किया गया है।
3. जिले की जनजातीय महिलाओं एवं पुरूषों में कार्यशील जनसंख्या को ज्ञात करते हुए कार्य सहभागिता दर की विवेचना की गयी है।
4. जिले की जनजातीय महिलाओं मे सामाजिक जागरूकता एवं महिला सशक्तिकरण के स्तर का पता लगाया गया है।

शोध विधि

शोध हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ही प्रकार के समंकों का संकलन किया गया है। प्राथमिक समंक के संकलन हेतु अनुसूची/प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। अनुसूची में जनजातीय महिलाओं के सामाजिक गतिशीलता से संबंधित प्रत्येक पहलू को शामिल किया गया है। प्रारंभिक सर्वेक्षण के आधार पर उपयुक्त अनुसूची का परीक्षण कर उसकी वास्तविकता एवं सार्थकता की जांच की गयी। अनुसूची में जनजातीय महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति से संबंधित सभी आवश्यक तथ्यों का समावेश हो। निर्मित की गयी अनुसूची में 200 आदिवासी महिलाओं का साक्षात्कार लिया गया है। एकत्रित किए गए प्राथमिक समंकों/स्त्रोतों में उच्च स्तर की शुद्धता प्राप्त करने के लिए प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुसंधान पद्धति का सहारा लिया गया है।

शोध कार्य में द्वितीयक समंको के लिए सरकारी प्रकाशनों, अद्धशासकीय संस्थाओं के प्रकाशन, आयोग एवं समितियों की रिपोर्ट, अप्रकाशित स्त्रोत, साहित्य, दैनिक एवं साप्ताहिक समाचार पत्र, मासिक पत्रिकाएँ आदि से आंकड़े एवं तथ्य प्राप्त किये गए हैं।

द्वितीयक समंकों में नैतिकता के परीक्षण हेतु प्राथमिक समंक एकत्र किए गए है। शोधकर्ता ने विभिन्न जनजातीय महिलाओं से मिलकर यह जानने का प्रयास किया है कि उनकी सामाजिक गतिशीलता एवं आर्थिक विकास से वह कहॉ तक लाभान्वित हुए है।

शोध का क्षेत्र

शोध का क्षेत्र सीमित है। यह शोध उमरिय जिले की जनजातीय महिलाओं में सामाजिक गतिशीलता पर केन्द्रित है अतः शोध क्षेत्र उमरिया जिले तक ही सीमित है। इस शोध में उमरिया जिले में निवासरत गोंड, कोल एवं बैगा जनजाति की महिलाओं में सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन करते हुए उनमें तुलनात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष निकाले गये हैं। जिले में निवासरत गोंड़, कोल, एवं बैगा जनजाति की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन कर निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं। इन जनजातीय महिलाओं के जीविकोपार्जन के साधनों तथा व्यापारिक क्रियाओं का अध्ययन करते हुए जनजातीय पुरूषों के साथ उनकी कार्य सहभागिता तथा सामाजिक दायित्वों की विवेचना की गयी है। इसके अतिरिक्त इनके सामाजिक क्रियाओं में रहन–सहन, परम्परायें, मिथक तथा संस्कारों आदि का अध्ययन किया गया है।

शोध का महत्व

उमरिया जिला एक आदिवासी बाहुल्य वाला जिला है। यहॉ गोंड, कोल एवं बैगा मुख्य रूप से तीन जनजातियॉ बड़ी संख्या में निवास करती है। यह तीनों आदिवासी समुदाय विकास की मुख्यधारा से दूर अभी भी पिछड़ी दशा में जीवन यापन करने को मजबूर है। कृषि, मजदूरी वनोपज संग्रह मछली मारना, जलाऊ लकड़ी जंगल से लाकर बेचना जैसे कार्यो में इन जनजातियों के पुरूष एवं स्त्री संलग्न है। ये आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से पिछड़े है इसलिए अन्य सुविधाओं से भी वंचित है। जिले में इन आदिवासी महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय है। निर्धनता, ऋणग्रस्तता, सामाजिक कुरीतियों एवं अशिक्षा के कारण ये जनजातीय महिलाएं विकास की परिभाषा से कोसों दूर है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

जिले में निवासरत गोंड, कोल एवं बैगा जनजाति की महिलाएँ बहुसंख्या में कृषि कार्य में संलग्न रहती हैं। कृषि के अन्तर्गत कृषि, पशुपालन, वानिकी एवं मत्स्यपालन क्षेत्रों में कार्य करती हैं। जिले में ऐसी महिलाएँ एवं परिवार जो भूमिहीन हैं, वे कृषि श्रमिक के रूप में कार्य करती हैं। सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि जनजातीय महिलाओं में सर्वाधिक दयनीय स्थिति बैगा महिलाओं की है, उसके बाद कोल महिलाओं आती हैं जबकि गोंड़ महिलाएँ तुलनात्मक रूप में कोल एवं बैगा महिलाओं की अपेक्षा आर्थिक रूप से उन्नत अवस्था में है। जिले में चयनित 200 परिवारों के सर्वेक्षण से यह बात भी सामने आयी कि जिले के लगभग 10 प्रतिशत जनजातीय परिवार जिनमें मुख्य रूप से कोल एवं बैगा महिलाएँ हैं, वे अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ कृषि श्रमिक के रूप में कार्य करने हेतु जिले के बाहर अन्य जिलों जैसे– सागर, दमोह, नरसिंहपुर तथा राज्य के सीमावर्ती प्रदेशों– उ.प्र., छत्तीसगढ़ आदि जाते हैं। फसल पकने/तैयार होने के बाद ऐसे परिवार पुनः लौट आते हैं। उमरिया जिले में कृषि करने में सर्वाधिक संख्या गोंड़ जनजाति की है, इसके बाद कोल एवं बैगा आते हैं। जिले के अधिकांश कोल एवं बैगा भूमिहीन हैं अर्थात् कोल एवं बैगा महिलाएँ अन्य दूसरी जातियों के यहाँ कृषि श्रमिक के रूप में कार्य करती हैं।

सारणी क्रमांक 1: उमरिया जिले में भूमि उपयोग (30 जून की स्थिति)[3]

वर्ष	कृषि के लिए जो भूमि उपलब्ध नहीं	अन्य अकृषि भूमि जिसमें पड़ती भूमि शामिल नहीं है	कृषि योग्य भूमि
2005.06	39616	15388	17683
2006.07	41724	15303	16602
2007.08	37095	16298	21358
2008.09	39553	15696	19406
तहसील / वि.खं.			
1. मानपुर	17762	10160	7829
2. करकेली	15679	4532	6733
3. पाली	6112	1004	4844

सारणी क्रमांक – 1 से स्पष्ट है कि उमरिया जिले में कुल कृषि योग्य भूमि वर्ष 2008–09 में 19406 हेक्टेयर थी जिसमें से अन्य अकृषि भूमि 15696 हेक्टेयर थी। जिले में वर्ष 2007–08 में कृषि योग्य भूमि 21358 हेक्टेयर थी, जो वर्ष 2008–09 में घटकर 19406 हेक्टेयर हो गयी। इस प्रकार स्पष्ट है कि जिले में कृषि भूमि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ने से कृषि की दशा एवं जनजातीय महिलाओं की आर्थिक दशा में सुधार नहीं हो पा रहा है। इसके साथ ही कृषि क्षेत्र में हमें अदृश्य बेरोजगारी के लक्षण दिखाई देते हैं जो कि जिले की जनजातीय महिलाओं की चिंताजनक आर्थिक स्थिति का एक प्रमुख कारण है।

जिले में कुछ जनजातीय महिलाएँ शासकीय/अर्द्धशासकीय सेवा में हैं। इनमें अध्यापिका, पुलिस, पोस्ट ऑफिस, वन विभाग, आंगनवाड़ी, कार्यकर्ता/सहायिका, आशा कार्यकर्ता, नर्स, पटवारी आदि हैं परन्तु इनका प्रतिशत बहुत ही कम है।

सारणी क्रमांक 2: जिले में रोजगार प्राप्त जनजातीय पुरुष एवं महिलाएँ

क्र.	विभाग	गोंड़		कोल		बैगा	
		पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला
1.	शिक्षा विभाग	1530	385	720	122	202	28
2.	पुलिस विभाग	704	80	15	02	38	06
3.	वन विभाग	1105	102	208	05	112	20
4.	स्वास्थ्य विभाग	21	62	09	37	08	14
5.	लोक निर्माण विभाग	45	25	13	06	08	12
6.	अन्य	1200	280	128	209	105	76

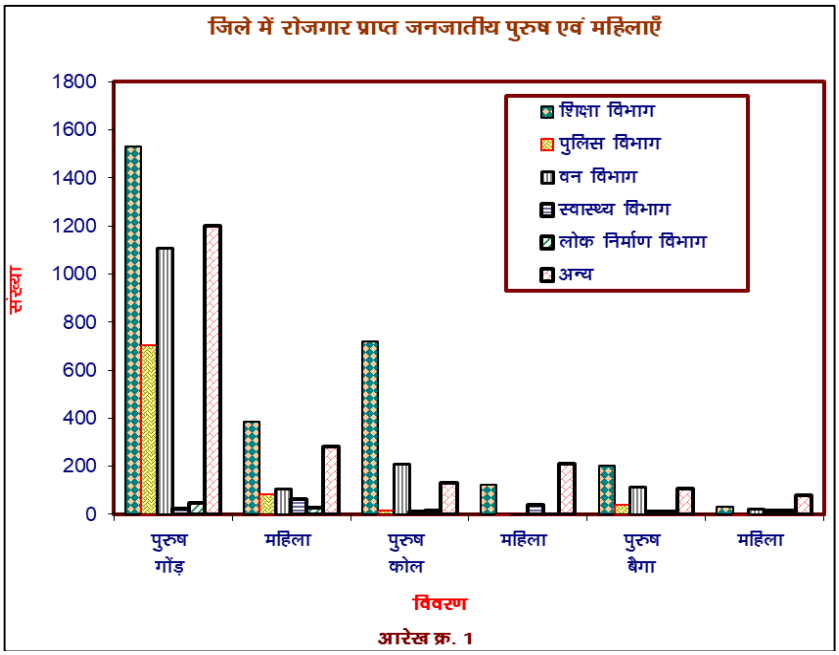

सारणी क्रमांक – 2 से स्पष्ट है कि जिले में जनजातीय महिलाओं में रोजगार का प्रमुख क्षेत्र शिक्षा विभाग है। जिले के विभिन्न विद्यालयों में वे शिक्षिका हैं। सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि गोंड़ जनजाति के पुरुष एवं महिलाएँ कोल एवं बैगा जाति के पुरुष एवं महिलाओं से शैक्षणिक रूप से आगे होने के कारण रोजगार प्राप्त हैं जबकि कोल पुरुष अधिकांश रूप से घरों में रहते हैं और उनकी महिलाएँ बाहर मजदूरी करने जाती हैं। वास्तव में म.प्र. की अधिकांश आबादी चाहे वह जनजातीय हो या गैर–जनजातीय, कृषि पर आश्रित है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार राज्य में कुल 257.56 लाख लोग कार्यशील हैं। इनमें से 184.39 लाख श्रमिक कृषि क्षेत्र में नियोजित हैं तथा 241.58 लाख श्रमिक असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं। राज्य में सबसे अधिक नियोजित व्यक्तियों की संख्या कृषि क्षेत्र में 184.39 लाख है, जिनमें असंगठित क्षेत्र में कुल 183.81 लाख श्रमिक कार्यरत हैं। इसे सारणी क्रमांक – 3 में दर्शाया गया है।[4]

सारणी क्रमांक 3: राज्य में कुल नियोजित, असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिक तथा कुल श्रमिकों में प्रतिशत का विवरण (श्रमिक लाखों में)

क्र.	क्षेत्र	नियोजित व्यक्तियों की संख्या	कुल नियोजित व्यक्तियों में से असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों की संख्या	कुल श्रमिकों की संख्या में असंगठित श्रमिकों का प्रतिशत
1.	कृषि क्षेत्र	184.39	183.81	99.7
	(अ) कृषक	110.58	110.23	99.7
	सीमान्त कृषक	42.80	42.67	99.7
	लघु कृषक	27.01	26.93	99.7
	अर्द्ध मध्यम कृषक	23.01	23.04	99.7
	मध्यम कृषक	14.19	14.87	99.7
	बड़े कृषक	2.73	2.72	99.7
	(ब) कृषक श्रमिक	73.80	73.57	99.7
2.	खनिज एवं खनिकर्म	2.00	0.64	31.9
3.	विनिर्माण	17.78	14.95	81.1
4.	विद्युत, जल आदि	0.66	0.02	3.0
5.	संनिर्माण	9.53	8.97	94.1
6.	व्यापार, होटल, रेस्टोरेंट	17.57	17.47	99.5
7.	परिवहन	5.52	3.95	71.6
8.	वित्तीय संस्था, व्यवसाय	1.50	0.71	47.3
9.	लोक प्रशासन, शिक्षा एवं वाणिज्य सेवाएँ	18.57	11.05	59.5
	कुल श्रमिक	257.56	241.58	93.8

सारणी क्रमांक 4: प्रमुख व्यवसाय एवं परिवार का स्वरूप

परिवार का आकार	संयुक्त	प्रतिशत	एकांकी	प्रतिशत	वृहद	प्रतिशत	कल	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
कृषि	44	63.00	23	31.52	4	5.48	-	-	73	18.25
व्यापार	51	55.44	38	41.30	3	3.26	-	-	92	23.00
सरकारी नौकरी	13	31.70	20	48.78	2	4.88	6	14.63	41	10.25
व्यक्तिगत नौकरी	1	8.33	9	75.00	1	8.33	1	8.34	12	3.00
प्रशासकीय नौकरी	-	-	10	90.91	1	9.09	-	-	11	2.75
लघु उद्योग धंधे	43	64.17	21	31.35	2	2.99	1	1.49	67	16.75
बेरोजगार	78	75.00	19	18.26	7	6.74	-	-	104	26.00
योग	232		140		20		8		400	100

सारणी क्रमांक – 3 से यह स्पष्ट है कि राज्य में कृषि क्षेत्र में सर्वाधिक श्रमिक नियोजित हैं। प्रदेश की कुल कार्यरत जनसंख्या का 72 प्रतिशत भाग प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से कृषि पर आधारित है, जबकि राज्य के सकल घरेलू उत्पाद (G.D.P.) का मात्र 31 प्रतिशत भाग कृषि क्षेत्र से आता है। जिले के अधिकांश जनजातीय परिवार कृषि क्षेत्र में संलग्न है इसके बाद व्यापार, सरकारी नौकरी, व्यक्तिगत नौकरी, लघु उद्योग एवं बेरोजगार है। सर्वेक्षण से यह विदित होता है कि उमरिया जिले में जनजातीय महिलाओं में धारित कृषि हेतु भूमि अन्य जिलों की अपेक्षा कम है। यदि जिले में ही तुलनात्मक रूप से देखा जाय तो गोंड़ परिवार अधिक समृद्ध हैं उसके बाद कोल एवं बैगा महिलाओं का स्थान आता है। जिले में अन्य लोगों द्वारा जनजातीय परिवारों/समाज की जमीन पर अतिक्रमण होने से कुछ परिवार भूमिहीन हो गये हैं। इसके साथ ही जनजातीय समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों एवं पुरुष प्रधान समाज होने के कारण भी जनजातीय महिलाएँ पुरुषों का अधिक विरोध नहीं कर पाती हैं। ऐसा अनुमान है कि भारत में महिला भू–स्वामियों की संख्या 2 प्रतिशत से अधिक नहीं है, परन्तु दूसरी तरफ वर्तमान में जहाँ 48 प्रतिशत पुरुष श्रमिक कृषि कार्य में संलग्न हैं, वहीं इस कार्य से जुड़ी महिला श्रमिकों की संख्या 75 प्रतिशत है। ग्रामीण क्षेत्रों में 20 प्रतिशत परिवारों की मुखिया महिलाएँ हैं।[5]

निष्कर्ष

जिले में जनजातीय महिलाओं के रोजगार के अन्य साधनों में मत्स्यपालन, वनोपज संग्रह, लकड़ी काटकर शहरों में बेंचना, दूसरे के घरों में घरेलू कार्य करना, तेंदू पत्ता संग्रह करके बेंचना, जड़ी–बूटी, शहद, महुआ आदि बेंचना है। सर्वेक्षण में यह पाया गया कि जिले में कुछ जनजातीय महिलाएँ ऐसी हैं जिनके पास कृषि योग्य भूमि होने के बावजूद वे अपनी भूमि पर कृषि कार्य न करके बड़े किसानों के यहाँ कृषि श्रमिक के रूप में कार्य करती हैं। इसका कारण पूँछने पर वे कृषि पर मानसून की निर्भरता, तथा सही समय पर खाद–बीज की अनुपलब्धता जैसे कारण बताती हैं। सरकार द्वारा कृषि उत्पादन बढ़ाने हेतु नवीन तकनीक तथा कृषि से सम्बन्धित विभिन्न योजनाओं की जानकारी जिले की अधिकांश जनजातीय महिलाओं को नहीं है। सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के प्रति वे अनभिज्ञ तथा उदासीन हैं क्योंकि वे काफी संख्या में अशिक्षित हैं।

इस प्रकार जिले की जनजातीय महिलाएँ कृषि, मजदूरी एवं बहुत ही कम भाग में शासकीय नौकरी में है। जिले में जनजातीय महिलाओं के स्वरोजगार हेतु कई कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं, जिसके लाभ आगामी समय में मिलेगा। शिक्षा के प्रति जागरूकता, उचित माहौल एवं संसाधन, सरकारी प्रोत्साहन आदि से जनजातीय महिलाओं को रोजगार में सफलता मिल सकेगी। इसके साथ ही जिले में रोजगार के नये अवसर पैदा करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ

1. ए.आर.एन. श्रीवास्तव – जनजातीय संस्कृति (2002) – म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल.
2. व्यास, आशुतोष – जनजातीय समाज और प्राथमिक शिक्षा (2009) – अंकुर प्रकाशन, उदयपुर, राजस्थान पेज–17
3. भू–अभिलेख उमरिया, जिला सांख्यिकी पुस्तिका – 2009, पेज 22.
4. म.प्र. सन्दर्भ– 2012– जनसम्पर्क संचालनालय, भोपाल पेज–738
5. योजना (अक्टूबर–2011) – भारत सरकार नई दिल्ली, पेज–11